

सम्पादकीय

वर्ष 2050 तक वैश्विक आबादी लगभग 10 अरब होगी और भोजन की कमी से बचने के लिए कृषि उत्पादन को दोगुना करना होगा। बढ़ती विश्व जनसंख्या की जरूरतों को पूरा करने के लिए वैश्विक कृषि खाद्य उत्पादन में कम से कम 70 फीसदी की वृद्धि करनी होगी। यह एक चुनौतीपूर्ण लक्ष्य है, क्योंकि कृषि क्षेत्र काफी हद तक एसी स्थितियों पर निर्भर करता है, जो पूरी तरह से नियंत्रित नहीं होती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों को संरचनात्मक ढांचे के आभाव से लेकर दिन प्रतिदिन छोटी हो रही जोत, किसानों के पास संसाधनों की कमी, उचित मूल्य न मिलना आदि प्रमुख समस्याओं का समाधान करना पड़ रहा है।

एक समय था कि ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि श्रम संसाधन की बहुलता थी आज के वर्तमान समय में श्रम संसाधन का बहुलता में अभाव है जिस के फलस्वरूप आज खेती की लागत भी बढ़ी है और समय पर कृषि कार्य संभव नहीं हो पा रहा है। हमारे देश के बहुसंख्यक किसानों के बीच खेती के कार्यकलापों में कृषि यंत्रों, उपकरणों एवं मशीनों का प्रयोग प्रचलन में नहीं है। आज भी अधिकांश किसान अपनी छोटी जोतों पर गहन श्रम एवं मशक्कत पर आधारित परम्परागत तौर - तरीकों से खेती करते हैं। ऐसे

कृषि मूलश्च जीवनम्

में छोटे और सीमांत किसानों के लिए सलाह है कि कृषि मशीनरी उपयोगिता से लाभ हासिल करें- इससे कृषि आदान (बीज, उर्वरक) में 10-15 प्रतिशत कमी, समय एवं श्रम में 20-30 प्रतिशत कमी के साथ फसल उत्पादन में 10-15 प्रतिशत वृद्धि की जा सकती है। इसके साथ साथ प्राकृतिक संसाधनों की बचत होती है। यह लाभ छोटे एवं सीमांत किसानों के लिए उचित ट्रेक्टर साईज एवं अटैचमेंट मशीन के प्रयोग से ही सम्भव है। अतः कृषि के कार्य हेतु छोटे छोटे जोत के किसानों के लिए छोटी मशीनों पर जोर देने की आवश्यकता है। वर्तमान समय में जुताई, बुआई और मड़ाई तक के छोटे छोटे मशीन आ गए हैं। इन यंत्रों पर सरकार की तरफ से अनुदान के भी प्रावधान है। किसानों को इन छोटे और मझोले कृषि यंत्रों को अपनी खेती में शामिल करने और एकल या समूहिक रूप से खरीदने की आवश्यकता है। मुझे विश्वास है कि परिवर्तन कृषि सन्देश के 20 वें अंक का प्रकाशन कृषको, प्रसार कार्यकर्ताओं तथा कृषि से जुड़े लोगों के लिए उपयोगी साबित होगा।

विवेक कुमार

खरीफ फसलों की बुआई रेज्ड बेड प्लान्टर से

खरीफ की दलहनी फसलों में अरहर प्रमुख फसल है उन्नत मशीनरी तकनीक से इसका उत्पादन दो गुना किया जा सकता है। अरहर के लिए भूमि बलुई या दोमट तथा पीएच मान 7-8 के बीच होनी चाहिए। वर्षा प्रारंभ होने के साथ खेती शुरू कर देनी चाहिए। देर से उपजने वाली प्रजाति के बीज को 15 किलो ग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से बोना चाहिए। वर्तमान समय के मौसम में हुए बदलाव से कभी कम बारिश होना या कभी अत्याधिक बारिश होने के कारण अरहर खेती में समस्या उत्पन्न होती है। ऐसे में परिवर्तन संस्था में उपलब्ध रेज्ड बेड

प्लान्टर मशीन की सहायता से अरहर की बोआई मेढ़ पर आसानी से की जा सकती है। इस विधि से बुआई करने पर बारिश से फसलें खराब नहीं होती हैं और खरपतवार का प्रभाव

भी कम पड़ता है। किसान इस मशीन की सहायता से अरहर के साथ तिल, बाजरा, उरद एवं मूंग की भी फसलें भी ले सकते हैं।



हरा चारा प्रबन्धन -

हर साल मौसम की मार की वजह से गेहूँ के रकबे और उत्पादन में कमी आती है। साथ ही धान की पुआल को जलाए जाने के कारण पशुपालकों की चारा प्रबन्धन की चिंता बढ़ती जा रही है। हर साल पशु पालक गेहूँ के सीजन में मवेशियों के लिए सूखा चारा के इंतजाम जुट जाते हैं। इससे दिन प्रति दिन भूसै की किल्लत

की होने लगी है। भूसै के आभाव में साल के अंत में मवेशियों का आधा अधूरा पेट ही भर पाता है और गर्मियों के दिनों में पशु का दाना ग्रहण करने की क्षमता घट जाती है जिसके कारण दुग्ध उत्पादन गिरने लगता है। अतः पशुओं का हर मौसम में विशेष ध्यान रखना आवश्यक है। पशुओं के लिए हरा चारा को बढ़ावा देने की

आवश्यकता है। पशुओं के संतुलित आहार में दाना और चारे का अनुपात 40 से 60 का रखना चाहिए। इस के लिए किसान बंधुओं को नैपियर घास, मखन घास, चरी, मक्का, सूडान, रिजका, ज्वार, बरसीम आदि चारा फसलों को वर्ष भर उगाने की आवश्यकता है।



मोटा अनाज की खेती होगी लाभकारी

आज किसान की जेब तो खाली है ही, उसकी सेहत भी खराब है। दरअसल जब देशी फसलों की खेती को कम करना शुरू किया गया तबसे कृषि क्षेत्र में अनेक बदलाव आए। हरित क्रांति ने खाद्य विविधता को लगभग खत्म कर दिया और हमारे खेतों और थाली से मोटे अनाज का महत्व भी कम हो गया। सभी लोग गेहूँ, चावल, मक्का की खेती पर जोर देने लगे हैं। मोटे अनाज कभी गाँव की थालियों में होते थे और वे

स्वास्थ्यवर्धक भी थे। आज दोबारा उन्हें खानपान की मुख्यधारा में लाने की आवश्यकता है। भारत में छह तरह के मोटे अनाज उगाये जाते हैं - बाजार, रागी, कंगनी, बारगु, ज्वार, समाई, कोदो आदि। भारत कई कारणों से मोटे अनाजों पर अब ध्यान बढ़ा रहा है। मोटा अनाज सूखा - प्रतिरोधी फसल है, जिसे खराब मिट्टी और कम वर्षा वाले क्षेत्रों में उगाया जा सकता है। वर्तमान समय में भारत

सरकार की तरफ से भी इसकी खेती को लेकर बढ़ावा दिया जा रहा है। स्वास्थ्य चेतना और खानपान की शैली में जो बदलाव आ रहे हैं उनसे इन अनाजों की मांग में जोर आया है। मोटे अनाज की बढ़ती मांग को देखते हुए भारतीय किसानों के लिए यह अच्छी आमदनी का रास्ता बन सकता है। किसान परिवर्तन का तकनीकी सहयोग लेकर मोटे अनाज को अपनाएं और लाभ कमायें।



समेकित खर पतवार प्रबन्धन प्रशिक्षण –

बदलती जलवायु के कारण अनेक तरह के नए खरपतवार निकल रहे हैं जिससे उत्पादन के साथ साथ फसल गुणवत्ता भी प्रभावित हो रही है। खरपतवारों के असमय नियंत्रण से खेती की लागत में भी बढ़ोत्तरी भी हो रही है। किसान खरपतवार पर समुचित नियंत्रण कैसे पाएं इसके लिए परिवर्तन परिसर में दिनांक 12/08/2023 को समेकित खरपतवार नियंत्रण विषय पर किसान गोष्ठी सह प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इस गोष्ठी में 64 किसान और 3 कृषि विशेषज्ञों की सहभागिता रही जिसमें खेती की नयी नयी तकनीक, कम खर्च में अधिक उत्पादन, किसानों की आय में वृद्धि हेतु विस्तार रूप से चर्चा की गई। किसानों को पत्ती और सीजन के आधार पर खरपतवार की पहचान करना और प्रभावी खरपतवार की नियंत्रण हेतु साफ़ बीज का उपयोग करना, गर्मी में खेती की गहरी जुताई,

फसल चक्र आदि उपायों को अपनाने की जानकारी दी गई। इंडियन इंसेक्टिसाइड लिमिटेड के पौध रक्षा कृषि वैज्ञानिक डा. विजय यादव ने नई नयी टेक्नोलोजी से बन रही कीटनाशक और खरपतवारनाशी रासायनिक दवाओं से सबको अवगत कराया और इन रासायनिक दवाओं द्वारा खेती में आने वाली समस्या का उचित समाधान भी सुझाया। साथ ही साथ इंसान के शरीर पर रसायनिक खाद

से होने वाले प्रतिकूल प्रभाव की चर्चा भी की गई। इफ्फको के क्षेत्रीय अधिकारी द्वारा नैनो यूरिया और नैनो डीपीएपी के बारे में जानकारी प्रदान की गई और हरी खाद जैसे ढैंचा, मूंग, उरद, सनई फसल आदि को अपनाने की सलाह भी दी गई। कार्यक्रम के अंत में उपस्थित किसानों को धान की फसल में खरपतवारनाशी दवाओं के प्रभाव को सजीव रूप से दिखाया भी गया।



रबी कार्यशाला –

परिवर्तन परिसर में दिनांक 19/09/23 को रबी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस आयोजन में 66 किसानों और कृषि विज्ञान केंद्र से 3 कृषि विशेषज्ञों की सहभागिता रही। इस कार्यशाला में वैज्ञानिक विधि से खेती कर, कम लागत में अधिक मुनाफ़े के तरीकों के बारे में समझाया गया। इफ्फको के क्षेत्रीय अधिकारी ने इफ्फो द्वारा विकसित नैनो डी या पी उपयोगिता और प्रयोग विधि के बारे में जानकारी प्रदान की।

कृषि विज्ञान केंद्र सिवान के कृषि वैज्ञानिक द्वारा जैविक खाद पर जोर देते हुए रासायनिक उर्वरक का उपयोग नहीं कर जैविक उर्वरक से फसल पैदावार करने की सलाह दी गई। मिट्टी की गुणवत्ता में वृद्धि तथा मिट्टी के पोषक तत्वों की भरपूर पूर्ति होने की बात कही गई, साथ ही साथ रबी सीजन की प्रमुख फसलों सरसों, गेहूँ तथा दलहन फसलों की कम लागत में वैज्ञानिक खेती के बारे में जानकारी प्रदान की गई। इस मौके पर

प्रधान मंत्री कृषि सम्मान निधि योजना के बारे में बतलाते हुए इस योजना से वंचित लाभार्थी को जल्द ई क्रे वासी कराने की सलाह दी गई। इस कार्यशाला में विगत वर्ष रबी सीजन में आने वाली समस्याओं और समाधान के ऊपर सामूहिक चर्चा की गई। साथ ही साथ किसान सेवा केंद्र द्वारा उपस्थित किसानों से रबी सीजन की आवश्यक कृषि इनपुट मांग को एकत्र किया गया।



महिला किसान दिवस -

सुप्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक डा. स्वामिनाथन के अनुसार विश्व में खेती का सूत्रपात और वैज्ञानिक विकास का आरम्भ महिलाओं ने ही किया। महिलाओं के उत्थान और सशक्तिकरण के लिए जेंडर संवेदीकरण के तहत, महिलाओं को तकनीकी प्रशिक्षण उपलब्ध करवाकर कृषि के मुख्यधारा से जोड़ना अति आवश्यक है। हमारे देश की 65 प्रतिशत आबादी आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है जिसमें से 50 प्रतिशत महिलाये कृषि में योगदान देती हैं। कृषि में महत्वपूर्ण भूमिका होते हुए भी इन्हें कठिनाई

का सामना करना पड़ रहा है। महिलाओं को कृषि के क्षेत्र में मदद करना और एक किसान के रूप में महिलाओं के श्रम को तव्वजो और सम्मान देने के उद्देश्य से परिवर्तन परिसर में महिला किसान दिवस का आयोजन किया गया। इस आयोजन में 69 महिलाओं की भागीदारी रही। इस कार्यक्रम की शुरुआत उपस्थित महिलाओं के स्वागत गीत से हुई। इस गोष्ठी में उपस्थित महिलाओं को स्वच्छता और पोषण से संबंधित जानकारी दी गई। उन्हें बतलाया गया कि हमारे भोजन में भरपूर पोषक तत्व होने चाहिए। इसके लिए हमें

पोषण वाटिका लगाना चाहिए जिससे विटामिन युक्त शाक सब्जी की प्राप्ति हो। इस कार्यक्रम में उपस्थित महिलाओं को कृषि की दैनिक गतिविधियों में लगने वाले श्रम बल को कैसे कम किया जाए इसके लिए उयुक्त युक्तियों की जानकारी दी गई। साथ ही साथ ड्रम सीडर, सिंह हैंड, हो, आदि छोटी मशीनों से अवगत किया गया और कृषि में इनकी अहम् भूमिका और परिवर्तन की अन्य गतिविधियों की जानकारी को साझा किया गया। खेती में आने वाली समस्याओं के ऊपर सामूहिक चर्चा भी की गई।



किसानों में बीज वितरण -

राजेंद्र प्रसाद कृषि विश्वविद्यालय से संबंधित कृषि विज्ञान केंद्र सिवान द्वारा समूह अग्रिम फसल प्रदर्शन योजना के तहत दिनांक 17/10/2023 को परिवर्तन परिसर में

मियाँभटकन और नरेन्द्रपुर पंचायत के 40 किसानों के बीच मसूर और सरसों बीज का वितरण किया गया। साथ ही साथ इसकी नवीनतम तकनीक पर आधारित सरसों के

फसल उत्पादन की वैज्ञानिक खेती के बारे में जानकारी दी गई और इसकी खेती में आने वाली दिक्कत के ऊपर सामूहिक चर्चा भी की गई।



पशु पालक एवं दुग्ध समिति बैठक -

दिनांक 31/10/2023 को परिवर्तन परिसर में पशुपालक एवं दुग्ध उत्पादक समिति किसानों के साथ बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में कुल 28 किसान एवं सुधा डेयरी के अध्यक्ष और मैनेजर शामिल रहें। दुग्ध

उत्पादक समितियों में आ रही खामियों - समय पर भुगतान ना होना, नाप तौल में गड़बड़ी जैसी समस्याओं में पारदर्शिता लाने पर चर्चा की गई। सुधा डेयरी मुज़फ्फरपुर दुग्ध उत्पादन समितियों से समय पर दूध ढुलाई

हेतु उचित वाहन व्यवस्था और स्थानीय बल्क कुल्लिंग सेंटर का प्रबन्धन किया जाने की बात भी कही गई।

भरोसे का केंद्र - किसान सेवा केंद्र -

परिवर्तन किसान सेवा केंद्र, भारत सरकार द्वारा जनहितार्थ परिवर्तन किसान उत्पादक कंपनी लिमिटेड (FPC) नाम से रजिस्टर्ड संस्था है जो पूर्णतः सहकारिता के नियमों पर आधारित किसान संगठन है। इसके द्वारा किसानों को आवश्यक कृषि इनपुट- खाद, बीज, पौध रक्षा रसायन, बाजार आदि की उपलब्धता को सेवा आधार शुल्क पर उपलब्ध कराया जाता है। इस किसान सेवा केंद्र संगठन से हज़ारों किसान जुड़कर खेती संबंधित सेवाओं का लाभ प्राप्त कर रहे हैं।



स्कूली बच्चों ने गांव और खेती बाड़ी को समझा-

दिल्ली पब्लिक स्कूल पटना के बच्चों ने दिनांक 14 अक्टूबर से 19 अक्टूबर तक परिवर्तन परिसर में रहकर परिवर्तन कार्यक्षेत्र गांवों में जमीनी स्तर पर भ्रमण किया। स्कूली बच्चों कृषि सदस्यों के सहयोग से बंगरा, रुड़या, खेम

भटकन, धर्मपुर में घर - घर जा कर किसान परिवारों से मिले और उनकी दैनिक गतिविधियों से अवगत हुए। इन्होंने किसान परिवार की सामाजिक आर्थिक स्तर को जानने की कोशिश की। खेती से होने वाले लाभ और

ग्रामीण स्तर के बैंक, साहूकार द्वारा लिए जाने वाली ऋण प्रक्रिया को भी बच्चों ने जाना। परिवर्तन द्वारा किये गये सकारात्मक हस्तक्षेप को भी समझा और किसानों की खेती बेहतर करने हेतु अनेक सुझाव भी दिए।



किसान दिवस -

परिवर्तन परिसर में देश के पूर्व प्रधान मंत्री चौधरी चरण सिंह की जयन्ती के अवसर पर राष्ट्रीय किसान दिवस आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में परिवर्तन कार्यक्षेत्र से महिला और पुरुष सहित 70 पशुपालक किसानों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

इस अवसर पर पशुपालक किसानों के साथ एव संवादात्मक गोष्ठी भी आयोजित की गई जिससे पशु विशेषज्ञों द्वारा पशुपालन व्यवसाय को और अधिक लाभकारी बनाने के लिए, गाय और भैंस की उन्नतशील प्रजातियों की पहचान, पशुआहार, पशु स्वास्थ्य, वर्ष भर चारा उत्पादन जैसे बिन्दुओं पर चर्चा परिचर्चा हुई। किसानों को यह भी बतलाया गया कि किसान केवल दुग्ध उत्पादन ही ना करके ब बछिया का



भी उत्पादन करें। यह पशुपालन व्यवसाय के लिए अधिक लाभकारी होता है। वर्तमान समय में केवल बछिया प्राप्ति हेतु सीमेन भी आ गया है। वर्तमान समय में पशु चारा उपलब्ध होना विकराल समस्या को जन्म दे रहा है। ऐसे में किसान भाई को पशुओं के लिए पूरे साल कम से कम एक या दो कठे में हरा

चारा का उत्पादन करने की सलाह दी गई है। परिवर्तन से जुड़े किसानो खेती की अच्छी प्रथाओ को अपनायें और किसान दिवस के मौके पर तकनीकी विस्तार में सहयोगी बनें। किसानो को परिवर्तन संस्था की तरफ से पुरस्कृत भी किया गया।

किसान भाई - खेती में निम्न बिन्दुओं पर ध्यान दे-

बरसाती प्याज की उन्नत खेती -

बरसाती प्याज की खेती मध्य प्रदेश , उत्तर प्रदेश तथा बिहार में भी हो रही है। नेफेड के द्वारा सेट उगाकर लगाने की तकनीक भी विकसित की गई है जो लाभकारी है।

मिट्टी - प्याज की बागवानी हेतु भूमि का चयन भी आवश्यक है क्योंकि कंद का विकास भूमि की संरचना पर भी निर्भर करता है। जीवाश्मयुक्त हल्की दोमट मिट्टी सबसे अच्छी है।

उन्नत प्रभेद- एन- 53 , एग्रीफाउन्डे , डाकरेड , बसवंत 780, अर्का कल्याण,

बीज की मात्रा - एक हेक्टेअर प्याज लगाने के लिए 10-12 kg बीज की आवश्यकता होती है।

नर्सरी तैयार करना - पौधशाला की तैयारी में खास ध्यान देकर उसे खरपतवार से मुक्त कर मिट्टी को भुरभुरी बनायें। पौधशाला में जल जमाव नहीं हो इसका विशेष ध्यान दें। पौधा शाला को छोटी क्यारियों में बाँट दें। साधारणतया एक हेक्टेयर प्याज की खेती 1/12 भाग में बीज लगाते हैं। पौधशाला में

बीज गिराने के बाद उसे पुआल अदि से ढँक देते हैं। बिचड़े को 4-5 सेमी. के होने के बाद डायथेन एम-45 का उसपर छिड़काव किया जाय ताकि वह सड़ने गलने से बच सके।

प्याज की बुआई तीन प्रकार से की जाती है।

सीधे बीज डालकर इसे बलुआही मिट्टी में उपयोग करते हैं। इस विधि में मिट्टी को अच्छे ढंग से तैयार कर बीज खेत में छोड़ देते है। इस विधि में बीज की मात्रा 7-8 kg आवश्यकता होती है।

गांठो से प्याज लगाना - छोटे छोटे प्याज की गांठो को अप्रैल - मई में लगाया जाता है। प्याज का 12-14 कुन्तल / हे. बीज लगता है।

बीज से पौधा तैयार कर खेत में लगा प्रचलित विधि है जिसके द्वारा प्याज की खेती बड़े पैमाने पर की जाती है।

बीज बोने का समय - मई के अंतिम सप्ताह से जून तक

नर्सरी प्रतिरोपण - अगस्त

अलगाने का समय - दिसम्बर - जनवरी

उपज - 19-20 टन / हे.।

धान की फसल में जिंक की कमी की पहचान और निदान -

धान बिहार की मुख्य खरीफ फसल है। धान की खेती में सघन विधियों को अपनाने से एवं अधिक उपज देने वाली फसलों के लगातार उगाने से भूमि में नाइट्रोजन , फास्फोरस एवं पोटाश के साथ साथ सूक्ष्म मात्रिक तत्वों की भी कमी हो जाती हैं। इसलिए नाइट्रोजन , फास्फोरस एवं पोटाश उर्वरक के भरपूर प्रयोग से भी हम धान की अच्छी पैदवार नहीं ले पा रहे हैं। किसान अभी तक इन सूक्ष्म तत्वों से अनजान हैं। सूक्ष्म मात्रिक तत्वों में विशेष रूप से जिंक और कहीं कहीं पर लोहा की कमी पाई जाती हैं। जिंक या जस्ता की कमी के लक्षण स्पष्ट रूप से धान की फसल में देखेजाते हैं। जिंक की कमी के कारण धान की फसल में खैरा रोग लग जाता है , जिस को दूर करने के लिए मिट्टी में जिंक सल्फेट उर्वरक का प्रयोग किया जाता है।



जिंक की कमी के कारण: धान के खेत में लगातार पानी भरे रहने के कारण मिट्टी में जस्ता यानि जिंक की कमी हो जाती है।

धान की फसल में अत्यधिक एवं अंसतुलित मात्रा में उर्वरक के प्रयोग से भी जिंक की कमी हो जाती है।

उसर भूमि में भी जिंक की कमी अधिकतर पाई जाती है।

जिंक की कमी के पूर्वानुमान- जब पौधे 3-4 सप्ताह के हो जाते हैं तो उन की पत्तियों पर

सर्वप्रथम लाल, बादामी या कत्यई रंग के धब्बे नोक पर दिखाई पड़ते हैं। जो धीरे धीरे पूरी पत्ती को ढक लेते हैं। बाद में पत्तियाँ कागज के समान निर्जीव हो जाती हैं।

जस्ते यानि जिंक की भारी कमी होने से पौधे झुलसे हुए से प्रतीत होते हैं।

पौधों की बढवार रुक जाती है।

पौधे की जड़ें कमजोर हो जाती हैं और उनका रंग भूरा हो जाता है।

जिंक की कमी दूर करने के उपाय -

खेत में लगातार भरे हुए पानी को बीच बीच में निकलते रहना चाहिए।

संतुलित उर्वरक का प्रयोग करना चाहिए।

कार्बनिक प्रदार्थ की उचित मात्रा ही खेतों में डालना चाहिए।

समय समय पर मिट्टी की जाँच कराते रहना चाहिये।

हल्दी की खेती -

हल्दी बिहार की प्रमुख मसाला फसल है। क्षेत्रफल एवं उत्पादन में इसका प्रथम स्थान है। हल्दी का उपयोग हमारे भोजन में नित्यादिन किया जाता है। इसे सभी धार्मिक कार्यों में मुख्य स्थान प्राप्त है। हल्दी के अनेक औषधीय गुण हैं। इसका उपयोग दवा एवं प्रसाधनों में भी होता है।

मिट्टी - हल्दी की अधिक उपज के लिए जीवाश्म जल निकास वाली बलुई दोमट भूमि उपयुक्त होती है।

किस्म - राजेंद्र सोनिया, RH5, RH 9, RH13

उर्वरक - N:P:K 100:50:100

बोआई का समय - हल्दी बोआई या रोपाई 15 मई से 30 मई का समय उपयुक्त है लेकिन विशेष परिस्थिति में 10 जून तक इसकी रोपाई की जा सकती है।

रोपाई - हल्दी की रोपाई दो प्रकार से की जा सकती है।

समतल विधि

मेंढ विधि

बुआई की दूरी तथा बीज की मात्रा -हल्दी की बोआई के लिए 30-35 ग्राम के गांठ उपयुक्त होती है। 30 x20 से.मी. की दूरी पर 5 से.मी. गहरी बुआई करें।

खरपतवार नियंत्रण एवं सिंचाई - हल्दी की खेती में निराई गुड़ाई अति आवश्यक है। पहली निकाई गुड़ाई 30 - 35 दिन पर आवश्यक करनी चाहिये। आवश्यकता अनुसार जड़ के आस पास मिट्टी चढ़ानी चाहिये। हल्दी की पैदावार बरसात में है होती इसीलिए इस फसल में सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है। जबकि समय पर वर्षा नहीं होने पर आवश्यकता अनुसार सिंचाई अवश्य करनी चाहिए।

उपज - हल्दी की फसल लगभग 200 दिन में तैयार होती है जिसकी औसत उपज 250 से 300 कुन्तल प्रति हेक्टेयर तक होती है।

अनुसंधान के झरोखे से

कृषि क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता ए आई , रेमोट सेंसिंग और ड्रोन व् रोबोट का उपयोग अब खेती में भी किया जायेगा।

अच्छे किस्म की तेल प्राप्ति हेतु सरसों उन्नतशील प्रजाति, पूसा डबल जीरो सरसों 33 है।

कीटनाशकों का बेहतर विकल्प है स्टिकी ट्रेप।

मक्के से बने एथेनाल से चलेंगी गाड़ियां।

बैगनी और टमाटर का एक पौधे से उत्पादन।

महत्वपूर्ण सूचनाएं

हरियाली कृषि ज्ञान केंद्र में मिट्टी जाँच की सुविधा निर्धारित शुल्क पर उपलब्ध है। किसान भाई मिट्टी नमूना अपने खेत से लेकर उसकी जाँच कराएं तथा उर्वरक की संस्तुत मात्रा ही अपने फसल में प्रयोग करें।

परिवर्तन पोली हॉउस में विभिन्न प्रकार की सब्जी उचित मूल्य पर उपलब्ध कराई जाती हैं, किसान भाई इसका लाभ उठाएं।

मिट्टी पलटने वाले हल, जिरोटिल मशीन, रेज्ड बेड प्लान्टर, रिज प्लान्टर आदि कृषि यंत्र उपलब्ध हैं। किसान भाई इन यंत्रों से अपनी खेत की तैयारी तथा फसल बुआई कर सकते हैं।

जन हितार्थ परिवर्तन किसान उत्पाद कम्पनी के किसान सेवा केंद्र से

जुड़कर उन्नतशील किस्म के बीज, इप्फको के उर्वरक, पशु आहार, कृषि रक्षा रसायन, जैव उर्वरक, कृषि इनपुट आदि सेवाएँ प्राप्त कर सकते हैं।

सहयोगी संस्थाएं

- सीरियल सिस्टम इनिशिएटिव फॉर साऊथ एशिया (सीसा),पटना
- भारतीय कृषि अनुसन्धान परिशद, रिसर्च काम्प्लेक्स, पूर्वी क्षेत्र, पटना
- भारतीय कृषि अनुसन्धान संस्थान क्षेत्रीय केंद्र, पूसा समस्तीपुर
- डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा समस्तीपुर
- बिहार कृषि विश्वविद्यालय सबौर भागलपुर
- हार्वेस्टप्लस क्षेत्रीय स्टेशन, पटना



संपर्क सूत्र

श्री विवेक कुशावाहा

(कृषि सलाहकार)

7236008395

श्री बलिन्द्र यादव

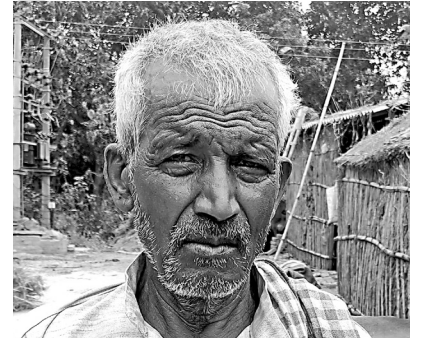
(कृषि सहायक)

7759931043

संबोधन – किसानों की सफल कहानी

चन्द्रभान यादव - मै चंद्रभान यादव, भरौली प्रखंड, जीरादेई का निवासी हूँ। मै अपनी खेती परम्परागत विधि से करता था जिसे विशेष लाभ नहीं मिला पाता था। मुझे अपनी मित्र मंडली से परिवर्तन के बारे में पता चला और परिवर्तन का भ्रमण कर कृषि इकाई के सदस्यों से मिला और आना जाना शुरू किया। परिवर्तन में आयोजित समय समय पर होने

वाली गोष्ठी में, मै भाग लेता रहा हूँ जहाँ से मुझे नयी - नयी तकनीकी जानकारी प्राप्त हुई। परिवर्तन किसान सेवा केंद्र से सही खाद और उन्नतशील बीज की प्राप्ति से मेरे उत्पादन में बढ़ोत्तरी हुई साथ ही साथ लागत में कमी आई। आज मै परिवर्तन से प्राप्त जानकारी को अन्य किसानों के बीच साझा भी करता हूँ।



प्रवीन सिंह - मै प्रवीन सिंह, ग्राम बंगरा, प्रखंड जीरादेई, सिवान का निवासी हूँ। मै अच्छी सैलरी पर विदेश में नौकरी करता था। करोना काल के दौरान मन में हुए बदलाव के कारण मैने गाँव की तरफ दोबारा रुख किया। गांव पर खाली रहने के बजाय घर की पुश्तैनी ज़मीन पर खेती करने लगा। खेती में जानकारी के आभाव में पर्याप्त उत्पादन नहीं मिलता था। मैने परिवर्तन के कृषि सलाहकार की मदद लेकर खेती करना शुरू किया जिससे अधिक लाभ भी मिलने लगा और उत्पादन में भी बढ़ोत्तरी हुई। साथ ही साथ अपने घर के प्रांगण में पोषक वाटिका का निर्माण भी किया और जैविक रूप से सब्जी उत्पादन भी करने लगा। परिवर्तन से मिली जानकारी से वर्ष भर शाक सब्जी का उत्पादन करता हूँ। आज की स्थिति यह है कि मुझे बाजार से रसायन युक्त सब्जी नहीं के बराबर खरीदनी पड़ती है। मै अपने गाँव के अगल बगल के लोगों को



भी परिवर्तन के सहयोग से पोषक वाटिका लगाने हेतु प्रोत्साहित करता रहता हूँ।